प्रथम सत्र

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 4 (2021–22)

हिन्दी – अ (कोड – 002)

कक्षा – 10

निर्धारित समय– 90 मिनट **अधिकतम अंक – 40**

सामान्य निर्देश–

1. इस प्रश्नपत्र में तीन खण्ड हैं – खण्ड – क, खण्ड – ख और खण्ड – ग।
2. इस प्रश्नपत्र में कुल 10 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों में उपप्रश्न दिए गए हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
3. खण्ड – क में कुल 20 प्रश्न पूछे गए हैं, दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए केवल 10 प्रश्नों के ही उत्तर दीजिए।
4. खण्ड – ख में कुल 20 प्रश्न पूछे गए हैं, दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए केवल 16 प्रश्नों के ही उत्तर दीजिए।
5. खण्ड – ग में कुल 14 प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
6. सही उत्तर वाले गोले को भली प्रकार से केवल नीली या काली स्याही वाले बॉल पॉइंट पेन से ही ओ.एम.आर. शीट में भरें।

खण्ड–क

अपठित अंश 10

1. **नीचे दो अपठित गद्यांश दिए गए हैं। किसी एक गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए–** $1 \times 5 = 5$

गान मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृति कही जा सकती है। आनंद में या विषाद में, मनुष्य गाए बिना नहीं रह सकता। सुख में गाकर वह उल्लासित होता है, दुख में गाकर वह दुख विस्मृत करता है। उसके सुख–दुख के भाववेष के क्षण गीतों में ही स्वरित होते हैं। ये गीत मानव जीवन का भोजन हैं। उसके हृदय की तृप्ति गीत गाकर ही होती है। आदिकाल से मानव हृदय गाता चला आ रहा है। सूर्य के प्रखर ताप में हल कृषण करता हुआ क्षेत्रक अपने गीतों से उसकी प्रखरता को भूलता है। तिमिरची निशा में उष्ट्ररोही ताना लगाता हुआ मरुभूमि की भीषण शून्यता का भान भूल जाता है। गाड़ीवान, गाडी के पहियों की ढचक–ढचक ध्वनि के साथ अपनी ध्वनि मिलाता हुआ उजली रात में कोस के कोस पार कर जाता है। जंगल में भेड़ों को चराते हुए गड़रिए के गान में समूचा जंगल प्रतिध्वनित होकर न केवल उसकी ध्वनि को, अपितु उसके अंतस्तल को भी प्रतिध्वनित कर देता है। ईंट और गारा ढोता हुआ मजदूर गान में मस्त होकर जीवन की दारुणता को भूल जाता है। आदिम मनुष्य के हृदय निस्तृत इन्हीं गानों को लोक गीत की संज्ञा दी गई है। मानव जीवन के उल्लास की, उमंगों की, करुणा की, उनके रूदन की, उनके समस्त दुख–सुख की कहानी इनमें चित्रित है। न जाने कितने काल को चीरकर ये गीत चले आ रहे हैं। काल का विध्वंसकारी प्रभाव इनका कुछ नहीं बिगाड़ सका।

i. लोकगीतों की संज्ञा किसे दी गई है?
(क) मानव की करुणा को
(ख) मानव के दुख को
(ग) मनुष्य के हृदय से निस्सृत गानों को
(घ) मनुष्य के रुदन को

ii. लोकगीत कालजयी होते हैं, क्योंकि
(क) ये मनुष्य के सुख–दुख के चिर सहचर हैं
(ख) ये समूची प्रकृति को प्रतिध्वनित करते हैं
(ग) काल का प्रभाव इनका कुछ नहीं बिगाड़ सका
(घ) ये कृषकों तथा श्रमिकों द्वारा गाए जाते हैं

iii. गान को मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृति कहना उचित है क्योंकि ये–
(क) मानव हृदय को तृप्ति प्रदान करता है
(ख) मानव जीवन का स्वादिष्ट भोजन है
(ग) मानव के भावाकुल हृदय की सहज अभिव्यक्ति है
(घ) मानव की थकान को सहज ही दूर कर देता है

iv. लोकगीतों से अभिप्रेत है?

(क) कोमलकोंत पदावली में विरचित भावपूर्ण गीत

(ख) संभ्रांत नागरिकों द्वारा गाया जाने वाला गीत

(ग) करुणा व पीड़ा को व्यक्त करने वाला गीत

(घ) आधुनिक सभ्यता से अप्रभावित गीत

v. श्रमिकों के लिए गान का बहुत अधिक महत्त्व है, क्योंकि वह–

(क) उसको सूर्य के ताप और निशा के अंधकार से दूर रखता है।

(ख) उसके कार्यक्षेत्र की कठोरता दूर करके उसे उल्लासित करता है।

(ग) उसके जीवन को उल्लास की उमंगों से भर देता है।

(घ) उसके हृदय की उन्मुक्ति अभिव्यक्त करता है।

अथवा

तत्ववेत्ता शिक्षाविदों के अनुसार शिक्षा दो प्रकार की होती है। प्रथम वह जो हमें जीवनयापन के लिए अर्जन करना सिखाती है और द्वितीय जो हमें जीना सिखलाती है। इनमें से एक का अभाव भी जीवन को निरर्थक बना देता है बिना कमाए जीवन निर्वाह संभव नहीं। कोई भी नहीं चाहेगा कि परावलंबी हो माता–पिता, परिवार के किसी सदस्य, जाति या समाज पर। ऐसे विद्याविहीन व्यक्ति का जीवन दूभर हो जाता है। वह दूसरों के लिए भार बन जाता है। साथ ही दूसरी विद्या के बिना सार्थक जीवन नहीं जिया जा सकता। अहुत अर्जित कर लेने वाले व्यक्ति का जीवन यदि सुचारु रूप से नहीं चल रहा, उसमें यदि वह जीवन शक्ति नहीं है जो उसके अपने जीवन को तो सत्पथ पर अग्रसर करती ही है साथ ही वह अपने समाज, जाति एवं राष्ट्र के लिए मार्गदर्शन करती है तो उसका जीवन भी मानव जीवन का अभिधान नहीं पा सकता वह भारवाही गर्दभ बन जाता है या पूँछ सींग विहीन पशु कहा जाता है। वर्तमान भारत में पहली विद्या का प्रायः अभाव पाया जाता है परंतु दूसरी विद्या का रूप भी विकृत ही है क्योंकि न तो स्कूल–कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त करके निकला छात्र जीविकोपार्जन के योग्य बन पाता है और न ही वह उन संस्कारों से युक्त हो पाता है, 'जिन्हें जीने की कला' की संज्ञा दी जा सकती है, जिनसे व्यक्ति 'क' से 'सु' बन जाता है। सुशिक्षित, सुसभ्य और सुसंस्कृत कहलाने का अधिकारी होता है। वर्तमान शिक्षा पद्धति के अंतर्गत हम जो विद्या प्राप्त कर रहे हैं, उसकी विशेषताओं को सर्वथा नकारा भी नहीं जा सकता है। यह शिक्षा कुछ सीमा तक हमारे दृष्टिकोण को विकसित भी करती है। हमारी मनीषा को प्रबुद्ध बनाती है तथा भावनाओं को चेतन करती है किंतु कला, शिल्प, प्रौद्योगिकी आदि की शिक्षा नाममात्र की होने के फलस्वरूप इस देश के स्नातक के लिए जीविकोपार्जन टेढ़ी खीर बन गया है और बृहस्पति बना युवक नौकरी की तलाश में ही अपने जीवन का बहुमूल्य समय नष्ट कर देता है। जीवन के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए यदि शिक्षा के क्रमिक सोपानों पर विचार किया जाए तो भारतीय विद्यार्थी को सर्वप्रथम इस प्रकार की शिक्षा देनी चाहिए जो आवश्यक हो, दूसरी जो उपयोगी हो और तीसरी जो हमारे जीवन को परिष्कृत व अलंकृत करती हो। ये तीनों सीढ़ियाँ एक के बाद एक आती हैं इनमें व्यतिक्रम नहीं होना चाहिए। इस क्रम में व्याघात आ जाने से मानव जीवन का चारू–प्रासाद खड़ा करना असंभव है यह तो भवन की छत बना कर नींव बताने के सदृश है। वर्तमान भारत में शिक्षा की अव्यवस्था देखकर ऐसा ही प्रतीत होता है। प्राचीन दार्शनिकों नें 'अन्न' से 'आनन्द' की ओर बढ़ने की जो 'विद्या का सार' कहा था वह सर्वथा समीचीन ही था और आज भी यह उतना ही सार्थक है जितना उस समय था।

i. 'जीने के लिए अर्जन करना सिखाने वाली' और 'जीना सिखाने वाली' विद्याओं को पारस्परिक संबंध में कौन–सा तथ्य सर्वाधिक उपयुक्त है?

(क) ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं

(ख) इन दोनों में अन्योन्याश्रित संबंध है

(ग) ये दोनों विरोधी विद्याएँ हैं

(घ) इन दोनों में पूर्वापर संबंध है

ii. मानव की संज्ञा पाने के लिए कौन–सी विद्या अभिष्ट है?

(क) अर्जनकारी विद्या

(ख) शिल्प शिक्षा

(ग) जीवनयापन के लिए उपयोगी विद्या

(घ) जीना सिखलाने वाली विद्या

iii. अर्जनकारी विद्या इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वह व्यक्ति को सिखाती है–

(क) ज्ञानार्जन का ढंग

(ख) धनार्जन के साधन

(ग) जीवनयापन की विधि

(घ) जीवन उत्कर्ष की विधि

iv. प्रत्येक व्यक्ति जीवनयापन के लिए स्वावलंबी होना पसंद करता है क्योंकि–

(क) वह जीने की कला सीखना चाहता है

(ख) वह अपने जीवन को दूभर नहीं बनाना चाहता

(ग) वह अपने सामाजिक ऋण से मुक्त होना चाहता है

(घ) वह अपने परिवार के प्रति कृतज्ञ होता है

v. शिक्षा के सोपानों का क्रम किस प्रकार होना चाहिए?
(क) परिष्कार, उपयोगिता और आवश्यकता
(ख) आवश्यकता, परिष्कार और उपयोगिता
(ग) उपयोगिता, आवश्यकता, एवं परिष्कार
(घ) आवश्यकता, उपयोगिता और परिष्कार

2. नीचे दो काव्यांश दिए गए हैं। किसी एक काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए— $1 \times 5 = 5$

चंदा–तारों–सी सहज कांति, नदियों में है मुस्कान भरी,
मूर्तियाँ बना डालीं सजीव, अनगढ़ पत्थर को काट–काट,
है पवन–झकोरों में दुलार खेतों में है दौलत बिखरी,
बंधुता–प्रेम को फैलाया, अपना ही अंतर बाँट–बाँट,
पग–पग मेरा विश्वास भरा,
जिसके गीतों से जगत् मुग्ध,
तप से है यह जीवन निखरा,
जिसके नृत्यों पर जगत् मुग्ध,
प्रखर कर्म का पाठ सतत–
जिसकी कविता–धारा अविरल–
पढ़ती मैं भारत माता हूँ।।
बहती वह भारत माता हूँ।।
मैं वज्र–सदृश विपदाओं को भी अनायास सह लेती हूँ,
सुधा–दान कर औरों को, मैं विष पीकर मुस्काती हूँ,
धीरज का पाठ पढ़ाती हूँ,
गौरव का मार्ग दिखाती हूँ,
मैं सहज बोध, मैं सहज शक्ति–
सुविवेकी भारत माता हूँ।।

i. खेतों में दौलत बिखरी होने से क्या तात्पर्य है?
(क) अच्छी फसल होती है
(ख) खज़ाने गड़े हैं
(ग) खाद के रूप में दौलत बिखेरी जाती है
(घ) किसान बहुत अमीर हैं

ii. निम्नलिखित में कौन–सा कथन उपयुक्त नहीं है?
(क) भारत माता सबको धीरज का पाठ पढ़ाती है
(ख) कष्ट सहना सिखाती है
(ग) कर्महीनता का पाठ पढ़ाती है
(घ) बंधुता–प्रेम को फैलाती है

iii. भारत ने अपना हृदय किस रूप में बाँटा है?
(क) फसलों के रूप में
(ख) दूसरों के प्रति प्रेम प्रदर्शित करके
(ग) मूर्तियाँ बनाकर
(घ) सुधा–दान करके

iv. प्रस्तुत काव्यांश में किन कलाओं की चर्चा हुई है?
(क) चाँद, तारे, नदियाँ, पवन
(ख) विश्वास, कर्म, धीरज, गौरव
(ग) सहज बोध, शक्ति, सुधा–दान, सुविवेक
(घ) संगीत, नृत्य, कविता, मूर्ति बनाना

v. निम्नलिखित में से कौन–सा विशेषण–विशेष्य का युग्म नहीं है?
(क) सहज क्रांति (ख) प्रखर कर्म
(ग) अनगढ़ पत्थर (घ) बंधुता–प्रेम

अथवा

सुख–दुख मैं मुस्काना धीरज से रहना,
वीरों की माता हूँ वीरों की बहना।
मैं वीर नारी हूँ
साहस की बेटी,
मातृभूमि–रक्षा को
वीर सजा देती।
आकुल अंतर की पीर राष्ट्र हेतु सहना,
वीरों की माता हूँ वीरों की बहना।
मातृ–भूमि जन्म–भूमि
राष्ट्र–भूमि मेरी,
कोटि–कोटि वीर पूत
द्वार–द्वार दे री।
जीवन–भर मुस्काए भारत का आँगना,
वीरों की माता हूँ वीरों की बहना।

i. सुख–दुख में मुस्कराते हुए कैसे रहना चाहिए?
(क) धीरज (ख) धीर
(ग) शीर (घ) वीर

ii. आकुल अंतर की पीड़ा किस के लिए सहनी चाहिए?
(क) राष्ट्र (ख) समाज
(ग) जाति (घ) धर्म

iii. मातृ–भूमि, जन्म–भूमि .... मेरी।
उपयुक्त शब्द से खाली स्थान भरिए।
(क) देव–भूमि (ख) गाँव–भूमि
(ग) शहर–भूमि (घ) राष्ट्र–भूमि

iv. भारत का अँगना कब तक मुस्कराए?
(क) जीवन–भर (ख) उम्र–भर
(ग) मुट्ठी–भर (घ) पल–भर

v. 'माता' के लिए पर्यायवाची छाँटिए–
(क) जननी (ख) दादी
(ग) नानी (घ) बुआ

खण्ड–ख

व्यावहारिक व्याकरण 16

3. निर्देशानुसार किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए– $1 \times 4 = 4$

i. आश्रित उपवाक्य के भेद होते हैं–

(क) दो (ख) तीन

(ग) पाँच (घ) चार

ii. "रमेश जाएगा परन्तु नरेश पढ़ेगा।" रचना की दृष्टि से यह वाक्य किस प्रकार का है?

(क) मिश्र वाक्य (ख) प्रधान उपवाक्य

(ग) संयुक्त वाक्य (घ) आश्रित उपवाक्य

iii. निम्नलिखित में से सरल वाक्य चुनकर लिखिए–

(क) माँ अखबार पढ़ चुकी है।

(ख) नीलम खाना खा चुकी है, अब निशा खाएगी।

(ग) जब तक दिनेश घर पहुँचा उसके मामाजी जा चुके थे।

(घ) आगरा में ताजमहल है, जो सफेद रंग का है।

iv. वह कहानी ऐसी–वैसी नहीं, बल्कि बहुत रोचक थी। इस वाक्य को सरल वाक्य में बदलिए।

(क) वह कहानी ऐसी–वैसी नहीं थी, वह तो बहुत रोचक थी।

(ख) वह कहानी बहुत रोचक थी इसलिए वह ऐसी–वैसी नहीं थी।

(ग) वह कहानी ऐसी–वैसी न होकर बहुत रोचक थी।

(घ) वह कहानी ऐसी–वैसी नहीं है, क्योंकि वह बहुत रोचक थी।

v. एक प्रधान उपवाक्य के शेष आश्रित उपवाक्य होने पर वह वाक्य कहलाएगा–

(क) सरल वाक्य

(ख) मिश्र वाक्य

(ग) संयुक्त वाक्य

(घ) क्रिया–विशेषण वाक्य

4. निर्देशानुसार किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए– $1 \times 4 = 4$

i. निम्नलिखित वाक्यों में से कर्मवाच्य वाला वाक्य है–

(क) सिपाही ने भागते हुए चोर को पकड़ा।

(ख) मीनाक्षी के द्वारा सुंदर गीत गाया गया।

(ग) हमें महान लोगों को सदा याद करना चाहिए।

(घ) मेरा मित्र इस समस्या पर विचार कर समाधान निकाल ही लेगा।

ii. निम्नलिखित वाक्यों में से भाववाच्य वाला है–

(क) माँ द्वारा बच्चे को सुला दिया गया।

(ख) नौकरानी के द्वारा घर का सारा काम किया गया।

(ग) मैं यह कठिन काम नहीं कर सकूँगा।

(घ) लोगों से इस गरमी में चला नहीं जा सका।

iii. निम्नलिखित वाक्यों में से कर्मवाच्य वाला वाक्य है–

(क) श्याम से रोटी को बिल्कुल नहीं खाया जाता।

(ख) रामचन्द्र जी ने सलता को त्याग दिया।

(ग) हिन्दुओं द्वारा रामायण पढ़ी जाती है।

(घ) कुलियों ने यात्रियों का सामान उठाया।

iv. निम्नलिखित वाक्यों में से भाववाच्य वाला वाक्य है–

(क) बच्चों के द्वारा खिलौन पसन्द किये जाते हैं।

(ख) अब और नहीं चला जा सकता।

(ग) श्याम बहुत लड़ता है।

(घ) नेताओं ने अपना चरित्र खो दिया गया है।

v. निम्नलिखित वाक्यों में से कर्तृवाच्य वाला वाक्य है–

(क) आयशा से कोई काम नहीं होता।

(ख) मैं थकान के कारण नहीं आ सका।

(ग) मुझसे इतनी गर्मी में दौड़ा नहीं जाता।

(घ) हम सबसे कल रात यही रुका जाएगा।

5. निर्देशानुसार किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए– $1 \times 4 = 4$

i. समाज में विभीषणों की संख्या बढ़ती जा रही है। इस वाक्य में रेखांकित पद का सही पद–परिचय होगा–

(क) जातिवाचक संज्ञा, बहुवचन, पुल्लिंग, संबंधकारक।

(ख) समूहवाचक संज्ञा, बहुवचन, पुल्लिंग, संबंधकारक।

(ग) भाववाचक संज्ञा, बहुवचन, पुल्लिंग, संबंधकारक।

(घ) व्यक्तिवाचक संज्ञा, बहुवचन, पुल्लिंग, संबंधकारक।

ii. कल रात देर तक बारिश होती रही। इस वाक्य में रेखांकित पद का सही पद–परिचय होगा–

(क) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण, 'होती रही' क्रिया की विशेषता बता रहा है।

(ख) कालवाचक क्रियाविशेषण, 'होती रही' क्रिया की विशेषता बता रहा है।

(ग) रीतिवाचक क्रियाविशेषण, 'होती रही' क्रिया की विशेषता बता रहा है।

(घ) स्थानवाचक क्रियाविशेषण, 'होती रही' क्रिया की विशेषता बता रहा है।

iii. विमला पत्र <u>लिख रही है</u>। इस वाक्य में रेखांकित पद का उचित पद–परिचय होगा–
(क) प्रेरणार्थक क्रिया, स्त्रीलिंग, एकवचन, वर्तमान काल।
(ख) द्विकर्मक क्रिया, स्त्रीलिंग, एकवचन, वर्तमान काल।
(ग) सकर्मक क्रिया स्त्रीलिंग, एकवचन, वर्तमान काल।
(घ) अकर्मक क्रिया, स्त्रीलिंग, एकवचन, वर्तमान काल।

iv. इस किताब में <u>अनेक</u> चित्र हैं। इस वाक्य में रेखांकित पद का उचित पद–परिचय होगा–
(क) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण, पुल्लिंग, बहुवचन, 'चित्र'– विशेष्य का विशेषण।
(ख) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण, पुल्लिंग, बहुवचन, 'चित्र'– विशेष्य का विशेषण
(ग) निश्चित संख्यावाचक विशेषण, पुल्लिंग, बहुवचन, 'चित्र'– विशेष्य का विशेषण।
(घ) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण, पुल्लिंग, बहुवचन, 'चित्र'– विशेष्य का विशेषण।

v. <u>उसने</u> कहा कि वह कल गुजरात जाएगा। सही वाक्य में रेखांकित पद का उचित पद–परिचय होगा
(क) सर्वनाम, प्रथमपुरूषवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक।
(ख) सर्वनाम, अन्यपुरूषवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक।
(ग) सर्वनाम, निजवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक।
(घ) सर्वनाम, मध्यमपुरूषवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक।

6. निर्देशानुसार किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए– $1 \times 4 = 4$

i. रसपति किस रस को कहा जाता है?
(क) करुण (ख) विप्रलंभ
(ग) श्रृंगार (घ) हास्य

ii. मोटे व्यक्ति की स्कूटर से भिड़ंत
लोगों ने पूछा–
''अरे क्या हुआ''
बोला वह ''...जी, मैं ठीक–ठाक हूँ
स्कूटर का अंजर–पंजर ढीला हो गया।''
उपर्युक्त पंक्तियों में कौन–सा रस है?
(क) वीभत्स रस (ख) हास्य रस
(ग) रौद्र रस (घ) शांत रस

iii. श्रृंगार रस का स्थायी भाव क्या है?
(क) रति (ख) संभोग
(ग) वियोग (घ) इनमें से कोई नहीं

iv. अनुभाव कहलाता है?
(क) मनोभाव
(ख) शरीर विकार
(ग) मनोभावों को व्यक्त करने वाले वाले मनो विकार
(घ) मनोभावों को व्यक्त करने वाले शारीरिक विकार

v. रसों का सर्वप्रथम विवेचन किस ग्रंथ में मिलता है?
(क) नाटक में
(ख) गीता में
(ग) नाट्यशास्त्र में
(घ) मुंडकोपनिषद में

खण्ड–ग

पाठ्य पुस्तक 14

7. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए– $1 \times 5 = 5$

न जाने किस वक्त जगकर वह नदी–स्नान को जाते–गाँव से दो मील दूर! वहाँ से नहा–धोकर लौटते और गाँव के बाहर ही, पोखरे के ऊँचे भिंडे पर, अपनी खँजड़ी लेकर जा बैठते और अपने गाने टेरने लगते। मैं शुरू से ही देर तक सोने वाला हूँ, किंतु, एक दिन, माघ की उस दाँत किटकिटाने वाली भोर में भी, उनका संगीत मुझे पोखरे पर ले गया था। अभी आसमान के तारों के दीपक बुझे नहीं थे। हाँ, पूरब में लोही लग गई थी जिसकी लालिमा को शुक्र तारा और बढ़ा रहा था। खेत, बगीचा, घर–सब पर कुहासा छा रहा था। सारा वातावरण अजीब रहस्य से आवृत्त मालूम पड़ता था। उस रहस्यमय वातावरण में एक कुश की चटाई पर पूरब मुँह, काली कमली ओढ़े, बालगोबिन भगत अपनी खँजड़ी लिए बैठे थे। उनके मुँह से शब्दों का ताँता लगा था, उनकी अँगुलियाँ खँजड़ी पर लगातार चल रही थीं। गाते–गाते इतने मस्त हो जाते, इतने सुरूर में आते, उत्तेजित हो उठते कि मालूम होता, अब खड़े हो जाएँगे। कमली तो बार–बार सिर से नीचे सरक जाती। मैं जाड़े से कँपकँपा रहा था, किंतु तारे की छाँव में भी उनके मस्तक के श्रमबिंदु, जब–जब, चमक ही पड़ते।

i. भगत नदी स्नान को गांव से कितनी दूर जाते थे?
(क) 2 मील (ख) 6 मील
(ग) 4 मील (घ) 10 मील

ii. लेखक को पोखरे पर कौन ले गया था?
(क) भगत का शोर (ख) कबीर के भजन
(ग) भगत का संगीत (घ) कोयल का स्वर

iii. 'लोही लग गई' लोही कहाँ लगी थी?
(क) पूरब में (ख) उत्तर में
(ग) पश्चिम में (घ) दक्षिण में

iv. प्रस्तुत गद्यांश में किस माह का वर्णन है?

(क) माघ (ख) चैत्र

(ग) कार्तिक (घ) वैशाख

v. खँजड़ी क्या है?

(क) वृक्ष (ख) खेत की मेड़

(ग) वाद्य यंत्र (घ) पक्षी

8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए— $1 \times 2 = 2$

i. हालदार साहब किस बात पर दुखी हो गए?

(क) पानवाले को देखकर

(ख) दुनिया के स्वार्थी स्वभाव पर

(ग) नेताजी की मूर्ति को देखकर

(घ) इनमें से कोई नहीं

ii. नेताजी की मूर्ति की ऊँचाई कितनी थी?

(क) 5 फुट (ख) 4 फुट

(ग) 3 फुट (घ) 2 फुट

9. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए— $1 \times 5 = 5$

लखन कहा हसि हमरे जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना।।
का छति लाभु जून धनु तोरें। देखा राम नयन के भोरें।।
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू।।
बोले चितै परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा।।
बालकु बोलि बधौं नहि तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोहि।।
बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही।।
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही।।
सहसबाहुभुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा।।
मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर।
गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर।।

i. प्रस्तुत काव्यांश में संवाद किनके बीच है?

(क) राम और परशुराम के बीच

(ख) लक्ष्मण और परशुराम के बीच

(ग) राम और लक्ष्मण के बीच

(घ) तीनों के बीच

ii. परशुराम के स्वभाव में क्या विशेषता नहीं थी?

(क) दुर्बल योद्धा

(ख) क्रोधी

(ग) बाल–बह्मचारी

(घ) क्षत्रियों के प्रबल विरोधी

iii. परशुराम ने अपने फरसे से क्या नहीं किया?

(क) क्षत्रिय कुल की रक्षा

(ख) क्षत्रिय कुल का विनाश

(ग) सहस्रबाहु की भुजाओं का नाश

(घ) माता की गर्दन काटी

iv. धनुष खंडित होने का सही कारण क्या था?

(क) पुराना धनुष होना

(ख) नया धनुष होना

(ग) राम का शिवभक्त होना

(घ) परशुराम से मित्रता होना

v. विपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही, संवाद कौन किससे कह रहा है?

(क) परशुराम, लक्ष्मण से

(ख) लक्ष्मण, परशुराम से

(ग) राम, परशुराम से

(घ) परशुराम राम से

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए— $1 \times 2 = 2$

i. सु तौ ब्याधि हमकौं ले आए' पंक्ति में 'ब्याधि' किसे कहा गया है?

(क) योग साधना को (ख) भक्ति संदेश को

(ग) श्रीकृष्ण को (घ) विरह को

ii. गोपियों के अनुसार किसने राजनीति की शिक्षा प्राप्त की है?

(क) कंस ने (ख) नंद ने

(ग) श्रीकृष्ण ने (घ) ऊधौ ने

प्रथम सत्र

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 4 (2021–22)

हिन्दी – अ (कोड – 002)

कक्षा – 10

निर्धारित समय– 90 मिनट **अधिकतम अंक – 40**

सामान्य निर्देश–

1. इस प्रश्नपत्र में तीन खण्ड हैं – खण्ड – क, खण्ड – ख और खण्ड – ग।
2. इस प्रश्नपत्र में कुल 10 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों में उपप्रश्न दिए गए हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
3. खण्ड – क में कुल 20 प्रश्न पूछे गए हैं, दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए केवल 10 प्रश्नों के ही उत्तर दीजिए।
4. खण्ड – ख में कुल 20 प्रश्न पूछे गए हैं, दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए केवल 16 प्रश्नों के ही उत्तर दीजिए।
5. खण्ड – ग में कुल 14 प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
6. सही उत्तर वाले गोले को भली प्रकार से केवल नीली या काली स्याही वाले बॉल पॉइंट पेन से ही ओ.एम.आर. शीट में भरें।

खण्ड—क

अपठित अंश 10

1. **नीचे दो अपठित गद्यांश दिए गए हैं। किसी एक गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए–** $1 \times 5 = 5$

गान मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृति कही जा सकती है। आनंद में या विषाद में, मनुष्य गाए बिना नहीं रह सकता। सुख में गाकर वह उल्लासित होता है, दुख में गाकर वह दुख विस्मृत करता है। उसके सुख–दुख के भाववेष के क्षण गीतों में ही स्वरित होते हैं। ये गीत मानव जीवन का भोजन हैं। उसके हृदय की तृप्ति गीत गाकर ही होती है। आदिकाल से मानव हृदय गाता चला आ रहा है। सूर्य के प्रखर ताप में हल कृषण करता हुआ क्षेत्रक अपने गीतों से उसकी प्रखरता को भूलता है। तिमिरची निशा में उष्ट्ररोही ताना लगाता हुआ मरुभूमि की भीषण शून्यता का भान भूल जाता है। गाड़ीवान, गाडी के पहियों की ढचक–ढचक ध्वनि के साथ अपनी ध्वनि मिलाता हुआ उजली रात में कोस के कोस पार कर जाता है। जंगल में भेड़ों को चराते हुए गड़रिए के गान में समूचा जंगल प्रतिध्वनित होकर न केवल उसकी ध्वनि को, अपितु उसके अंतस्तल को भी प्रतिध्वनित कर देता है। ईंट और गारा ढोता हुआ मजदूर गान में मस्त होकर जीवन की दारुणता को भूल जाता है। आदिम मनुष्य के हृदय निस्तृत इन्हीं गानों को लोक गीत की संज्ञा दी गई है। मानव जीवन के उल्लास की, उमंगों की, करुणा की, उनके रूदन की, उनके समस्त दुख–सुख की कहानी इनमें चित्रित है। न जाने कितने काल को चीरकर ये गीत चले आ रहे हैं। काल का विध्वंसकारी प्रभाव इनका कुछ नहीं बिगाड़ सका।

i. लोकगीतों की संज्ञा किसे दी गई है?
(क) मानव की करुणा को
(ख) मानव के दुख को
(ग) मनुष्य के हृदय से निस्सृत गानों को
(घ) मनुष्य के रुदन को
उत्तर : (ग) मनुष्य के हृदय से निस्सृत गानों को

ii. लोकगीत कालजयी होते हैं, क्योंकि
(क) ये मनुष्य के सुख–दुख के चिर सहचर हैं
(ख) ये समूची प्रकृति को प्रतिध्वनित करते हैं
(ग) काल का प्रभाव इनका कुछ नहीं बिगाड़ सका
(घ) ये कृषकों तथा श्रमिकों द्वारा गाए जाते हैं
उत्तर : (ग) काल का प्रभाव इनका कुछ नहीं बिगाड़ सका

iii. गान को मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृति कहना उचित है क्योंकि ये–

(क) मानव ह्रदय को तृप्ति प्रदान करता है

(ख) मानव जीवन का स्वादिष्ट भोजन है

(ग) मानव के भावाकुल ह्रदय की सहज अभिव्यक्ति है

(घ) मानव की थकान को सहज ही दूर कर देता है

उत्तर : (ग) मानव के भावाकुल ह्रदय की सहज अभिव्यक्ति है

iv. लोकगीतों से अभिप्रेत है?

(क) कोमलकोंत पदावली में विरचित भावपूर्ण गीत

(ख) संभ्रांत नागरिकों द्वारा गाया जाने वाला गीत

(ग) करुणा व पीड़ा को व्यक्त करने वाला गीत

(घ) आधुनिक सभ्यता से अप्रभावित गीत

उत्तर : (घ) आधुनिक सभ्यता से अप्रभावित गीत

v. श्रमिकों के लिए गान का बहुत अधिक महत्त्व है, क्योंकि वह–

(क) उसको सूर्य के ताप और निशा के अंधकार से दूर रखता है।

(ख) उसके कार्यक्षेत्र की कठोरता दूर करके उसे उल्लासित करता है।

(ग) उसके जीवन को उल्लास की उमंगों से भर देता है।

(घ) उसके ह्रदय की उन्मुक्ति अभिव्यक्त करता है।

उत्तर : (घ) उसके ह्रदय की उन्मुक्ति अभिव्यक्त करता है।

अथवा

तत्ववेत्ता शिक्षाविदों के अनुसार शिक्षा दो प्रकार की होती है। प्रथम वह जो हमें जीवनयापन के लिए अर्जन करना सिखाती है और द्वितीय जो हमें जीना सिखलाती है। इनमें से एक का अभाव भी जीवन को निरर्थक बना देता है बिना कमाए जीवन निर्वाह संभव नहीं। कोई भी नहीं चाहेगा कि परावलंबी हो माता–पिता, परिवार के किसी सदस्य, जाति या समाज पर। ऐसे विद्याविहीन व्यक्ति का जीवन दूभर हो जाता है। वह दूसरों के लिए भार बन जाता है। साथ ही दूसरी विद्या के बिना सार्थक जीवन नहीं जिया जा सकता। अहुत अर्जित कर लेने वाले व्यक्ति का जीवन यदि सुचारु रूप से नहीं चल रहा, उसमें यदि वह जीवन शक्ति नहीं है जो उसके अपने जीवन को तो सत्पथ पर अग्रसर करती ही है साथ ही वह अपने समाज, जाति एवं राष्ट्र के लिए मार्गदर्शन करती है तो उसका जीवन भी मानव जीवन का अभिधान नहीं पा सकता वह भारवाही गर्दभ बन जाता है या पूँछ सींग विहीन पशु कहा जाता है। वर्तमान भारत में पहली विद्या का प्रायः अभाव पाया जाता है परंतु दूसरी विद्या का रूप भी विकृत ही है क्योंकि न तो स्कूल–कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त करके निकला छात्र जीविकोपार्जन के योग्य बन पाता है और न ही वह उन संस्कारों से युक्त हो पाता है, 'जिन्हें जीने की कला' की संज्ञा दी जा सकती है, जिनसे व्यक्ति 'क' से 'सु' बन जाता है। सुशिक्षित, सुसभ्य और सुसंस्कृत कहलाने का अधिकारी होता है। वर्तमान शिक्षा पद्धति के अंतर्गत हम जो विद्या प्राप्त कर रहे हैं, उसकी विशेषताओं को सर्वथा नकारा भी नहीं जा सकता है। यह शिक्षा कुछ सीमा तक हमारे दृष्टिकोण को विकसित भी करती है। हमारी मनीषा को प्रबुद्ध बनाती है तथा भावनाओं को चेतन करती है किंतु कला, शिल्प, प्रौद्योगिकी आदि की शिक्षा नाममात्र की होने के फलस्वरूप इस देश के स्नातक के लिए जीविकोपार्जन टेढ़ी खीर बन गया है और बृहस्पति बना युवक नौकरी की तलाश में ही अपने जीवन का बहुमूल्य समय नष्ट कर देता है। जीवन के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए यदि शिक्षा के क्रमिक सोपानों पर विचार किया जाए तो भारतीय विद्यार्थी को सर्वप्रथम इस प्रकार की शिक्षा देनी चाहिए जो आवश्यक हो, दूसरी जो उपयोगी हो और तीसरी जो हमारे जीवन को परिष्कृत व अलंकृत करती हो। ये तीनों सीढ़ियाँ एक के बाद एक आती हैं इनमें व्यतिक्रम नहीं होना चाहिए। इस क्रम में व्याघात आ जाने से मानव जीवन का चारू–प्रासाद खड़ा करना असंभव है यह तो भवन की छत बना कर नींव बताने के सदृश है। वर्तमान भारत में शिक्षा की अव्यवस्था देखकर ऐसा ही प्रतीत होता है। प्राचीन दार्शनिकों नें 'अन्न' से 'आनन्द' की ओर बढ़ने की जो 'विद्या का सार' कहा था वह सर्वथा समीचीन ही था और आज भी यह उतना ही सार्थक है जितना उस समय था।

i. 'जीने के लिए अर्जन करना सिखाने वाली' और 'जीना सिखाने वाली' विद्याओं को पारस्परिक संबंध में कौन–सा तथ्य सर्वाधिक उपयुक्त है?

(क) ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं

(ख) इन दोनों में अन्योन्याश्रित संबंध है

(ग) ये दोनों विरोधी विद्याएँ हैं

(घ) इन दोनों में पूर्वापर संबंध है

उत्तर : (क) ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं

ii. मानव की संज्ञा पाने के लिए कौन–सी विद्या अभिष्ट है?

(क) अर्जनकारी विद्या

(ख) शिल्प शिक्षा

(ग) जीवनयापन के लिए उपयोगी विद्या

(घ) जीना सिखलाने वाली विद्या

उत्तर : (घ) जीना सिखलाने वाली विद्या

iii. अर्जनकारी विद्या इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वह व्यक्ति को सिखाती है–

(क) ज्ञानार्जन का ढंग

(ख) धनार्जन के साधन

(ग) जीवनयापन की विधि

(घ) जीवन उत्कर्ष की विधि

उत्तर : (क) ज्ञानार्जन का ढंग

iv. प्रत्येक व्यक्ति जीवनयापन के लिए स्वावलंबी होना पसंद करता है क्योंकि–

(क) वह जीने की कला सीखना चाहता है

(ख) वह अपने जीवन को दूभर नहीं बनाना चाहता

(ग) वह अपने सामाजिक ऋण से मुक्त होना चाहता है

(घ) वह अपने परिवार के प्रति कृतज्ञ होता है

उत्तर : (ख) वह अपने जीवन को दूभर नहीं बनाना चाहता

v. शिक्षा के सोपानों का क्रम किस प्रकार होना चाहिए?

(क) परिष्कार, उपयोगिता और आवश्यकता

(ख) आवश्यकता, परिष्कार और उपयोगिता

(ग) उपयोगिता, आवश्यकता, एवं परिष्कार

(घ) आवश्यकता, उपयोगिता और परिष्कार

उत्तर : (घ) आवश्यकता, उपयोगिता और परिष्कार

2. नीचे दो काव्यांश दिए गए हैं। किसी एक काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए– $1 \times 5 = 5$

चंदा–तारों–सी सहज कांति, नदियों में है मुस्कान भरी,
मूर्तियाँ बना डालीं सजीव, अनगढ़ पत्थर को काट–काट,
है पवन–झकोरों में दुलार खेतों में है दौलत बिखरी,
बंधुता–प्रेम को फैलाया, अपना ही अंतर बाँट–बाँट,
पग–पग मेरा विश्वास भरा,
जिसके गीतों से जगत् मुग्ध,
तप से है यह जीवन निखरा,
जिसके नृत्यों पर जगत् मुग्ध,
प्रखर कर्म का पाठ सतत–
जिसकी कविता–धारा अविरल–
पढ़ती मैं भारत माता हूँ।।
बहती वह भारत माता हूँ।।
मैं वज्र–सदृश विपदाओं को भी अनायास सह लेती हूँ,
सुधा–दान कर औरों को, मैं विष पीकर मुस्काती हूँ,
धीरज का पाठ पढ़ाती हूँ,
गौरव का मार्ग दिखाती हूँ,
मैं सहज बोध, मैं सहज शक्ति–
सुविवेकी भारत माता हूँ।।

i. खेतों में दौलत बिखरी होने से क्या तात्पर्य है?

(क) अच्छी फसल होती है

(ख) खज़ाने गड़े हैं

(ग) खाद के रूप में दौलत बिखेरी जाती है

(घ) किसान बहुत अमीर हैं

उत्तर : (क) अच्छी फसल होती है

ii. निम्नलिखित में कौन–सा कथन उपयुक्त नहीं है?

(क) भारत माता सबको धीरज का पाठ पढ़ाती है

(ख) कष्ट सहना सिखाती है

(ग) कर्महीनता का पाठ पढ़ाती है

(घ) बंधुता–प्रेम को फैलाती है

उत्तर : (ग) कर्महीनता का पाठ पढ़ाती है

iii. भारत ने अपना हृदय किस रूप में बाँटा है?

(क) फसलों के रूप में

(ख) दूसरों के प्रति प्रेम प्रदर्शित करके

(ग) मूर्तियाँ बनाकर

(घ) सुधा–दान करके

उत्तर : (ख) दूसरों के प्रति प्रेम प्रदर्शित करके

iv. प्रस्तुत काव्यांश में किन कलाओं की चर्चा हुई है?

(क) चाँद, तारे, नदियाँ, पवन

(ख) विश्वास, कर्म, धीरज, गौरव

(ग) सहज बोध, शक्ति, सुधा–दान, सुविवेक

(घ) संगीत, नृत्य, कविता, मूर्ति बनाना

उत्तर : (घ) संगीत, नृत्य, कविता, मूर्ति बनाना

v. निम्नलिखित में से कौन–सा विशेषण–विशेष्य का युग्म नहीं है?

(क) सहज क्रांति

(ख) प्रखर कर्म

(ग) अनगढ़ पत्थर

(घ) बंधुता–प्रेम

उत्तर : (घ) बंधुता–प्रेम

अथवा

सुख–दुख मैं मुस्काना धीरज से रहना,
वीरों की माता हूँ वीरों की बहना।
मैं वीर नारी हूँ
साहस की बेटी,
मातृभूमि–रक्षा को
वीर सजा देती।
आकुल अंतर की पीर राष्ट्र हेतु सहना,
वीरों की माता हूँ वीरों की बहना।
मातृ–भूमि जन्म–भूमि

राष्ट्र—भूमि मेरी,
कोटि—कोटि वीर पूत
द्वार—द्वार दे री।
जीवन—भर मुस्काए भारत का आँगना,
वीरों की माता हूँ वीरों की बहना।

i. सुख—दुख में मुस्कराते हुए कैसे रहना चाहिए?

(क) धीरज (ख) धीर

(ग) शीर (घ) वीर

उत्तर : (क) धीरज

ii. आकुल अंतर की पीड़ा किस के लिए सहनी चाहिए?

(क) राष्ट्र (ख) समाज

(ग) जाति (घ) धर्म

उत्तर : (क) राष्ट्र

iii. मातृ—भूमि, जन्म—भूमि .... मेरी।
उपयुक्त शब्द से खाली स्थान भरिए।

(क) देव—भूमि (ख) गाँव—भूमि

(ग) शहर—भूमि (घ) राष्ट्र—भूमि

उत्तर : (ग) शहर—भूमि

iv. भारत का अँगना कब तक मुस्कराए?

(क) जीवन—भर (ख) उम्र—भर

(ग) मुट्ठी—भर (घ) पल—भर

उत्तर : (क) जीवन—भर

v. 'माता' के लिए पर्यायवाची छाँटिए—

(क) जननी (ख) दादी

(ग) नानी (घ) बुआ

उत्तर : (क) जननी

खण्ड—ख

व्यावहारिक व्याकरण 16

3. निर्देशानुसार किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए— $1 \times 4 = 4$

i. आश्रित उपवाक्य के भेद होते हैं—

(क) दो (ख) तीन

(ग) पाँच (घ) चार

उत्तर : (ख) तीन

ii. "रमेश जाएगा परन्तु नरेश पढ़ेगा।" रचना की दृष्टि से यह वाक्य किस प्रकार का है?

(क) मिश्र वाक्य

(ख) प्रधान उपवाक्य

(ग) संयुक्त वाक्य

(घ) आश्रित उपवाक्य

उत्तर : (ग) संयुक्त वाक्य

iii. निम्नलिखित में से सरल वाक्य चुनकर लिखिए—

(क) माँ अखबार पढ़ चुकी है।

(ख) नीलम खाना खा चुकी है, अब निशा खाएगी।

(ग) जब तक दिनेश घर पहुँचा उसके मामाजी जा चुके थे।

(घ) आगरा में ताजमहल है, जो सफेद रंग का है।

उत्तर : (क) माँ अखबार पढ़ चुकी है।

iv. वह कहानी ऐसी—वैसी नहीं, बल्कि बहुत रोचक थी। इस वाक्य को सरल वाक्य में बदलिए।

(क) वह कहानी ऐसी—वैसी नहीं थी, वह तो बहुत रोचक थी।

(ख) वह कहानी बहुत रोचक थी इसलिए वह ऐसी—वैसी नहीं थी।

(ग) वह कहानी ऐसी—वैसी न होकर बहुत रोचक थी।

(घ) वह कहानी ऐसी—वैसी नहीं है, क्योंकि वह बहुत रोचक थी।

उत्तर : (ग) वह कहानी ऐसी—वैसी न होकर बहुत रोचक थी।

v. एक प्रधान उपवाक्य के शेष आश्रित उपवाक्य होने पर वह वाक्य कहलाएगा—

(क) सरल वाक्य

(ख) मिश्र वाक्य

(ग) संयुक्त वाक्य

(घ) क्रिया—विशेषण वाक्य

उत्तर : (ख) मिश्र वाक्य

4. निर्देशानुसार किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए— $1 \times 4 = 4$

i. निम्नलिखित वाक्यों में से कर्मवाच्य वाला वाक्य है—

(क) सिपाही ने भागते हुए चोर को पकड़ा।

(ख) मीनाक्षी के द्वारा सुंदर गीत गाया गया।

(ग) हमें महान लोगों को सदा याद करना चाहिए।

(घ) मेरा मित्र इस समस्या पर विचार कर समाधान निकाल ही लेगा।

उत्तर : (ख) मीनाक्षी के द्वारा सुंदर गीता गाया गया।

ii. निम्नलिखित वाक्यों में से भाववाच्य वाला है—

(क) माँ द्वारा बच्चे को सुला दिया गया।

(ख) नौकरानी के द्वारा घर का सारा काम किया गया।

(ग) मैं यह कठिन काम नहीं कर सकूँगा।

(घ) लोगों से इस गरमी में चला नहीं जा सका।

उत्तर : (घ) लोगों से इस गरमी में चला नहीं जा सकता।

iii. निम्नलिखित वाक्यों में से कर्मवाच्य वाला वाक्य है–
(क) श्याम से रोटी को बिल्कुल नहीं खाया जाता।
(ख) रामचन्द्र जी ने सलता को त्याग दिया।
(ग) हिन्दुओं द्वारा रामायण पढ़ी जाती है।
(घ) कुलियों ने यात्रियों का सामान उठाया।
उत्तर : (ग) हिन्दुओं द्वारा रामायण पढ़ी जाती है।

iv. निम्नलिखित वाक्यों में से भाववाच्य वाला वाक्य है–
(क) बच्चों के द्वारा खिलौन पसन्द किये जाते हैं।
(ख) अब और नहीं चला जा सकता।
(ग) श्याम बहुत लड़ता है।
(घ) नेताओं ने अपना चरित्र खो दिया गया है।
उत्तर : (ख) अब और नहीं चला जा सकता।

v. निम्नलिखित वाक्यों में से कर्तृवाच्य वाला वाक्य है–
(क) आयशा से कोई काम नहीं होता।
(ख) मैं थकान के कारण नहीं आ सका।
(ग) मुझसे इतनी गर्मी में दौड़ा नहीं जाता।
(घ) हम सबसे कल रात यही रुका जाएगा।
उत्तर : (क) आयशा से कोई काम नहीं होता।

5. निर्देशानुसार किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए– **$1 \times 4 = 4$**

i. समाज में विभीषणों की संख्या बढ़ती जा रही है। इस वाक्य में रेखांकित पद का सही पद–परिचय होगा–
(क) जातिवाचक संज्ञा, बहुवचन, पुल्लिग, संबंधकारक।
(ख) समूहवाचक संज्ञा, बहुवचन, पुल्लिग, संबंधकारक।
(ग) भाववाचक संज्ञा, बहुवचन, पुल्लिग, संबंधकारक।
(घ) व्यक्तिवाचक संज्ञा, बहुवचन, पुल्लिग, संबंधकारक।
उत्तर : (क) जातिवाचक संज्ञा, बहुवचन, पुल्लिग, संबंधकारक।

ii. कल रात देर तक बारिश होती रही। इस वाक्य में रेखांकित पद का सही पद–परिचय होगा–
(क) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण, 'होती रही' क्रिया की विशेषता बता रहा है।
(ख) कालवाचक क्रियाविशेषण, 'होती रही' क्रिया की विशेषता बता रहा है।
(ग) रीतिवाचक क्रियाविशेषण, 'होती रही' क्रिया की विशेषता बता रहा है।
(घ) स्थानवाचक क्रियाविशेषण, 'होती रही' क्रिया की विशेषता बता रहा है।
उत्तर : (ख) कालवाचक क्रियाविशेषण, 'होती रही' क्रिया की विशेषता बता रहा है।

iii. विमला पत्र लिख रही है। इस वाक्य में रेखांकित पद का उचित पद–परिचय होगा–
(क) प्रेरणार्थक क्रिया, स्त्रीलिंग, एकवचन, वर्तमान काल।
(ख) द्विकर्मक क्रिया, स्त्रीलिंग, एकवचन, वर्तमान काल।
(ग) सकर्मक क्रिया स्त्रीलिंग, एकवचन, वर्तमान काल।
(घ) अकर्मक क्रिया, स्त्रीलिंग, एकवचन, वर्तमान काल।
उत्तर : (ग) सकर्मक क्रिया, स्त्रीलिंग, एकवचन, वर्तमान काल।

iv. इस किताब में अनेक चित्र हैं। इस वाक्य में रेखांकित पद का उचित पद–परिचय होगा–
(क) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण, पुल्लिग, बहुवचन, 'चित्र'– विशेष्य का विशेषण।
(ख) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण, पुल्लिग, बहुवचन, 'चित्र'– विशेष्य का विशेषण
(ग) निश्चित संख्यावाचक विशेषण, पुल्लिग, बहुवचन, 'चित्र'– विशेष्य का विशेषण।
(घ) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण, पुल्लिग, बहुवचन, 'चित्र'– विशेष्य का विशेषण।
उत्तर : (घ) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण, पुल्लिग बहुवचन 'चित्र'– विशेष्य का विशेषण।

v. उसने कहा कि वह कल गुजरात जाएगा। सही वाक्य में रेखांकित पद का उचित पद–परिचय होगा
(क) सर्वनाम, प्रथमपुरूषवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिग, कर्ता कारक।
(ख) सर्वनाम, अन्यपुरूषवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिग, कर्ता कारक।
(ग) सर्वनाम, निजवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिग, कर्ता कारक।
(घ) सर्वनाम, मध्यमपुरूषवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिग, कर्ता कारक।
उत्तर : (क) सर्वनाम, प्रथमपुरूषवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिग, कर्ता कारक।

6. निर्देशानुसार किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए– **$1 \times 4 = 4$**

i. रसपति किस रस को कहा जाता है?
(क) करुण (ख) विप्रलंभ
(ग) श्रृंगार (घ) हास्य
उत्तर : (ग) श्रृंगार

ii. मोटे व्यक्ति की स्कूटर से भिड़ंत
लोगों ने पूछा–
''अरे क्या हुआ''
बोला वह ''...जी, मैं ठीक–ठाक हूँ
स्कूटर का अंजर–पंजर ढीला हो गया।''

उपर्युक्त पंक्तियों में कौन–सा रस है?

(क) वीभत्स रस (ख) हास्य रस

(ग) रौद्र रस (घ) शांत रस

उत्तर : (ख) हास्य रस

iii. श्रृंगार रस का स्थायी भाव क्या है?

(क) रति (ख) संभोग

(ग) वियोग (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर : (क) रति

iv. अनुभाव कहलाता है?

(क) मनोभाव

(ख) शरीर विकार

(ग) मनोभावों को व्यक्त करने वाले वाले मनो विकार

(घ) मनोभावों को व्यक्त करने वाले शारीरिक विकार

उत्तर : (घ) मनोभावों को व्यक्त करने वाले शारीरिक विकार

v. रसों का सर्वप्रथम विवेचन किस ग्रंथ में मिलता है?

(क) नाटक में (ख) गीता में

(ग) नाट्यशास्त्र में (घ) मुंडकोपनिषद में

उत्तर : (ग) नाट्यशास्त्र में

खण्ड—ग

पाठ्य पुस्तक 14

7. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए— $1 \times 5 = 5$

न जाने किस वक्त जगकर वह नदी–स्नान को जाते–गाँव से दो मील दूर! वहाँ से नहा–धोकर लौटते और गाँव के बाहर ही, पोखरे के ऊँचे भिंडे पर, अपनी खँजड़ी लेकर जा बैठते और अपने गाने टेरने लगते। मैं शुरू से ही देर तक सोने वाला हूँ, किंतु, एक दिन, माघ की उस दाँत किटकिटाने वाली भोर में भी, उनका संगीत मुझे पोखरे पर ले गया था। अभी आसमान के तारों के दीपक बुझे नहीं थे। हाँ, पूरब में लोही लग गई थी जिसकी लालिमा को शुक्र तारा और बढ़ा रहा था। खेत, बगीचा, घर–सब पर कुहासा छा रहा था। सारा वातावरण अजीब रहस्य से आवृत्त मालूम पड़ता था। उस रहस्यमय वातावरण में एक कुश की चटाई पर पूरब मुँह, काली कमली ओढ़े, बालगोबिन भगत अपनी खँजड़ी लिए बैठे थे। उनके मुँह से शब्दों का ताँता लगा था, उनकी अँगुलियाँ खँजड़ी पर लगातार चल रही थीं। गाते–गाते इतने मस्त हो जाते, इतने सुरूर में आते, उत्तेजित हो उठते कि मालूम होता, अब खड़े हो जाएँगे। कमली तो बार–बार सिर से नीचे सरक जाती। मैं जाड़े से कँपकँपा रहा था, किंतु तारे की छाँव में भी उनके मस्तक के श्रमबिंदु, जब–जब, चमक ही पड़ते।

i. भगत नदी स्नान को गांव से कितनी दूर जाते थे?

(क) 2 मील (ख) 6 मील

(ग) 4 मील (घ) 10 मील

उत्तर : (क) 2 मील

ii. लेखक को पोखरे पर कौन ले गया था?

(क) भगत का शोर (ख) कबीर के भजन

(ग) भगत का संगीत (घ) कोयल का स्वर

उत्तर : (ग) भगत का संगीत

iii. 'लोही लग गई' लोही कहाँ लगी थी?

(क) पूरब में (ख) उत्तर में

(ग) पश्चिम में (घ) दक्षिण में

उत्तर : (क) पूरब में

iv. प्रस्तुत गद्यांश में किस माह का वर्णन है?

(क) माघ (ख) चैत्र

(ग) कार्तिक (घ) वैशाख

उत्तर : (क) माघ

v. खँजड़ी क्या है?

(क) वृक्ष (ख) खेत की मेड़

(ग) वाद्य यंत्र (घ) पक्षी

उत्तर : (ग) वाद्य यंत्र

8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए— $1 \times 2 = 2$

i. हालदार साहब किस बात पर दुखी हो गए?

(क) पानवाले को देखकर

(ख) दुनिया के स्वार्थी स्वभाव पर

(ग) नेताजी की मूर्ति को देखकर

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर : (ख) दुनिया के स्वार्थी स्वभाव पर

ii. नेताजी की मूर्ति की ऊँचाई कितनी थी?

(क) 5 फुट (ख) 4 फुट

(ग) 3 फुट (घ) 2 फुट

उत्तर : (घ) 2 फुट

9. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए— $1 \times 5 = 5$

लखन कहा हसि हमरे जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना।।
का छति लाभु जून धनु तोरें। देखा राम नयन के भोरें।।
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू।।
बोले चितै परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा।।
बालकु बोलि बधौं नहि तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोहि।।
बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही।।
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही।।
सहसबाहुभुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा।।

मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर।
गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर।।

i. प्रस्तुत काव्यांश में संवाद किनके बीच है?
(क) राम और परशुराम के बीच
(ख) लक्ष्मण और परशुराम के बीच
(ग) राम और लक्ष्मण के बीच
(घ) तीनों के बीच
उत्तर : (ख) लक्ष्मण और परशुराम के बीच

ii. परशुराम के स्वभाव में क्या विशेषता नहीं थी?
(क) दुर्बल योद्धा
(ख) क्रोधी
(ग) बाल–बह्मचारी
(घ) क्षत्रियों के प्रबल विरोधी
उत्तर : (क) दुर्बल योद्धा

iii. परशुराम ने अपने फरसे से क्या नहीं किया?
(क) क्षत्रिय कुल की रक्षा
(ख) क्षत्रिय कुल का विनाश
(ग) सहस्रबाहु की भुजाओं का नाश
(घ) माता की गर्दन काटी
उत्तर : (क) क्षत्रिय कुल की रक्षा

iv. धनुष खंडित होने का सही कारण क्या था?
(क) पुराना धनुष होना
(ख) नया धनुष होना
(ग) राम का शिवभक्त होना
(घ) परशुराम से मित्रता होना
उत्तर : (ग) राम का शिवभक्त होना

v. विपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही, संवाद कौन किससे कह रहा है?
(क) परशुराम, लक्ष्मण से
(ख) लक्ष्मण, परशुराम से
(ग) राम, परशुराम से
(घ) परशुराम राम से
उत्तर : (क) परशुराम, लक्ष्मण से

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए– **$1 \times 2 = 2$**

i. सु तौ ब्याधि हमकौं ले आए' पंक्ति में 'ब्याधि' किसे कहा गया है?
(क) योग साधना को (ख) भक्ति संदेश को
(ग) श्रीकृष्ण को (घ) विरह को
उत्तर : (क) योग साधना को

ii. गोपियों के अनुसार किसने राजनीति की शिक्षा प्राप्त की है?
(क) कंस ने (ख) नंद ने
(ग) श्रीकृष्ण ने (घ) ऊधौ ने
उत्तर : (ग) श्रीकृष्ण ने